भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मीडिया और हिंदी भाषा का योगदान

रोहित रामचन्द्र जाधव

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18143892

ABSTRACT:

पत्रकारिता यह हमारे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। पहले से ही समाज को सुधारने में, आगे बढ़ाने में, या दुनिया के हर एक कोने से रूबरू कराने का कार्य पहले से यह मीडिया यानी पत्रकारिता करती आ रही है। कुछ इसी प्रकार पत्रकारिता का योगदान स्वतंत्रता संग्राम में भी था। देश को जोड़ने में, एक साथ लाने में, अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाने में इसी पत्रकारिता ने कार्य किया था। लेकिन यह इतना भी आसान नहीं था, क्योंकि भारत बहुभाषिक देश है। भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं, लेकिन एक भाषा ऐसी है जो भारत में ज्यादातर लोग समझ पाते हैं, बोल पाते हैं। वह यानी 'हिंदी' और इस हिंदी के माध्यम से पत्रकारिता में इसका सहयोग से देश को जोड़ने का कार्य करते नजर आता है। देश के युवाओं को नवजागरण करने का कार्य, सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से आंदोलन में सहयोग लेने के लिए, उत्साहित करने का कार्य हिंदी मीडिया ने किया। यह कार्य हिंदी भाषा के योगदान के अंतर्गत कई माध्यम पर मीडिया ने जागृत करने का कार्य बहुत बखूबी निभाया है। इसी के साथ ही समाज में उस वक्त चल रही अनेक रूढ़िबद्ध परंपराओं पर किस प्रकार आवाज उठाई है, इन सभी मुद्दों पर इस रिसर्च पेपर के माध्यम से प्रकाश डालने की कोशिश की है।

KEYWORDS:

भारत, स्वतंत्रता, मीडिया, हिन्दी, समाचार पत्र.

प्रस्तावना:

आज मीडिया यानी संचार माध्यम या जनसंचार का साधन है। आज मीडिया अनेक माध्यम से हमारे सम्मुख है। जैसे कि टेलीविजन, समाचार पत्र, रेडियो आदि के माध्यम से यह हमें समाज में घटित घटना या समाचार से या फिर दुनिया के विविध क्षेत्रों से जोड़ने का कार्य करती है। करीबन 1826 से यह हमारे बीच है, अपना कार्य कर रही है। साथ ही इसका सहयोग भारतीय स्वतंत्रता और हिंदी नवजागरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाने में हिंदी मीडिया का विशेष सहयोग रहा है।

सामाजिक, सांस्कृतिक, राजकीय आदि को जोड़ने में, या अपने सम्मुख रखने में कार्य करती नजर आती है। हिंदी भाषा में राजकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक माध्यम से देश को एक डोर में बांधने की कोशिश की है। इसी विषय पर इस रिसर्च पेपर के माध्यम से सामने लाने की कोशिश की है।

1. स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा और मीडिया का योगदान

1.1 'हिंदी पत्रकारिता का आरंभ'

पत्रकारिता यानी मीडिया, इसका स्वतंत्रता संग्राम में मुख्य उद्देश्य यह था कि देश में उठ रही आवाज़ को हर एक कोने में पहुंचाया जाए। सभी को एक साथ लाया जाए, इस उद्देश्य से कार्य करने के लिए हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत '30 मई 1826' में कोलकाता से 'उदंत मार्तंड' से हुई, इसके संपादक 'जुगल किशोर शुक्ला' थे। यह हिंदी भाषा में प्रकाशित होने वाला पहला समाचार पत्र था। इसने हिंदी भाषा को साहित्य तथा समाज के लिए मंच प्रदान किया था। उदंत मार्तंड के माध्यम से जनता के सामने सामाजिक तथा राजनीतिक मुद्दों पर विचार विमर्श होने का माध्यम बना, यह पत्र सामान्य लोगों के लिए था, जिससे जनता में जागरूकता फैलाने की कोशिश की। वैसे अगर देखा जाए तो मीडिया इस समाज को जोड़े रखने का कार्य करती है। जिस प्रकार आज हर अच्छी-बुरी खबर को हम तक पहुंचाने का कार्य यह करती है, उसी प्रकार उस वक्त इसका कार्य था।

1.2 स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख हिंदी समाचार पत्र और पत्रिकाएँ

देखा जाए तो समाचार पत्र समाज के लिए दिशा-दर्शक की भूमिका निभाते हुए नजर आते हैं। कुछ इसी प्रकार का कार्य समाचार पत्र का स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी था, उस वक्त कई ऐसे पत्रकार थे या समाचार पत्र थे, जिनके माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में देश को जोड़ने का कार्य तथा सभी जानकारी हर एक कोने में पहुँचाने का कार्य इन समाचार पत्रों के माध्यम से हुआ। इसमें 'हिंदुस्तान' जो हिंदी में स्वतंत्रता संग्राम के विचार का प्रसार करता था, 'कर्मवीर' इसके माध्यम से लोकमान्य तिलक जी के विचारों को आंदोलन में प्रेरणा दी जाती थी, 'नौजवान भारत सभा' यह समाचार पत्र युवाओं का समर्थन करने के लिए था, और समकालीन यह साहित्य और विचारों का मंच था। इन जैसे कई अनेक पत्र थे जिनका विशेष योगदान हमें स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा के माध्यम से दिखाई देता है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से जनता में राष्ट्रीय जागरूकता फैलाने का कार्य किया। अंग्रेजों और अन्य

भाषाओं के पत्रों के विपरीत हिंदी में सीधे आम जनता से संवाद किया। इसकी वजह से अपनी भाषा के माध्यम से सीधा संवाद रखा।

1.3 हिंदी भाषा और जन जागरूकता

उस वक्त लोगों की मानसिकता कुछ इस प्रकार थी कि लोगों का एक-दूसरे पर विश्वास रखना मुश्किल था। भारत बहुभाषिक देश होने की वजह से, भारत में अनेक ऐसी भाषाएँ थीं जिनके वजह से जनता में संवाद करने के लिए मुश्किल हो रही थी। लेकिन हिंदी यह भाषा एक ऐसी भाषा थी, जिसे ज्यादातर लोग समझ सकते थे और बोल सकते थे। इसीलिए सभी को एक साथ लाने के लिए और जन जागरूकता करने के लिए समाचार पत्र की अगर कोई भाषा होनी चाहिए तो हिंदी होनी चाहिए, ऐसा सोच के हिंदी भाषा का इस्तेमाल होने लगा। हिंदी भाषा में ग्रामीण तथा शहर दोनों वर्गों को एक साथ लाना और संदेश पहुँचाने का कार्य किया। समाचार पत्रों ने देश में हो रही घटनाएं तथा राजकीय विचारों को जनता तक सरल भाषा में पहुँचाने का कार्य किया। हिंदी भाषा की वजह से आम लोगों को आंदोलन का महत्व समझ सका और ज्यादातर लोग सहयोग देने लगे।

2. हिंदी नवजागरण में मीडिया और भाषा का योगदान

2.1 भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी साहित्य

आधुनिक हिंदी साहित्य में अगर सबसे प्रथम किसी का योगदान आता है या कोई नाम आएगा सामने, तो वे होंगे भारतेंदु हरिश्चंद्र। इन्हें हिंदी साहित्य का जनक भी माना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र जिनका हिंदी नवजागरण में विशेष योगदान दिखाई देता है, उन्होंने “कविवचन सुधा” 1868, “हरिश्चंद्र मैगजीन” 1873 और “बाल बोधिनी” 1874 जैसी पत्रिकाओं का संपादन करके हिंदी समाचार पत्र में विशेष योगदान दिया।

2.2 हिंदी पत्रकारिता का सामाजिक सुधार में योगदान

हिंदी पत्रिकाओं ने अनेक माध्यम से भारत को स्वतंत्रता दिलाने में योगदान दिया है। उसी में से एक घटक या अंश मानें तो सामाजिक सुधार है, जिसमें राजा राममोहन राय, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर आदि ने अपना योगदान दिया है। राजा राममोहन जी का देखा जाए तो “संवाद कौमुदी” इस पत्रिका द्वारा सती प्रथा के खिलाफ आवाज उठाते नजर आते हैं। सती प्रथा, बाल विवाह, अंधविश्वास जैसी अनेक समस्याओं

के खिलाफ इन पत्रिकाओं ने अपना अहम हिस्सा निभाया है। वैसे देखा जाए तो यह महान विचारकों के विचारों को समाज में पहुँचाने का यह पत्रिका एक माध्यम थी, इन्हें पढ़कर लोगों को अपनी गलतियां समझने लगी थीं।

3.3 हिंदी भाषा और जनता का संवाद

वैसे देखा जाए तो हिंदी भाषा न केवल भाषा होकर, यह लोगों को एक डोर में बांधने का काम करती है। कुछ इसी प्रकार इस भाषा के सहयोग से समाचार पत्र ने लोगों को एक जगह बांधने का कार्य किया। समाचार पत्र, पत्रिकाएं और पुस्तक आम जनता के लिए सुलभ माध्यम थे। यह सिर्फ विचारों का प्रचार-प्रसार करने के लिए नहीं, तो भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक मूल्यों का संरक्षण करने के लिए भी थे। हिंदी भाषा ने जनता में सामाजिक जागरूकता, राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पहचान आदि निर्माण करने का कार्य किया। इसी के सहयोग से स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी नवजागरण दोनों में ही जनता का सक्रिय सहयोग इस हिंदी समाचार पत्र के माध्यम से होते हुए नजर आता है।

3. हिंदी भाषा का प्रभाव और परिणाम

राष्ट्रीय जागरूकता के लिए – हिंदी भाषा के माध्यम से समाचार पत्रों ने देश को जागरूक करने का कार्य किया। सभी के अंदर देशभक्ति, राष्ट्रीय भावना निर्माण करने का कार्य करते हुए नजर आती है।

सामाजिक सुधार – देशभक्ति के साथ ही समाज में घटित अन्य रूढ़िबद्ध परंपरा से जुड़ी समस्या के प्रति आवाज उठाते हुए और सामाजिक सुधार करने में भी मदद करती नजर आती है।

निष्कर्ष

इस पूरे शोध प्रक्रिया के माध्यम से यह प्रतीत होता है कि शुरुआती दौर से ही समाचार पत्रों का अहम योगदान रहा है। लोगों को देश के प्रति आदर निर्माण करने से लेकर देश के लिए लड़ने तक, सभी को एकजुट करने में और अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाने में पहले से ही मदद करते हुए नजर आते हैं। इसी के साथ समाज सुधारने में और समाज में चल रही अनेक रूढ़ि परंपरा प्रथा के खिलाफ आवाज उठाते हैं, और वह बंद होने तक उसके खिलाफ एक अहम भूमिका निभाई है। लोगों को आसानी से समझ में आने वाली हिंदी भाषा है। यह हिंदी समाचार पत्र दोनों ही देश स्वतंत्र करने में महत्वपूर्ण रहे हैं।

संदर्भ:

1. BYJU'S IAS Hindi, "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रेस की भूमिका," https://byjus.com/ias-hindi/what-was-the-role-of-the-press-in-freedom-struggle-in-hindi/
2. पाण्डेय, वंदना, स्वतंत्रता संग्राम एवं हिंदी पत्रकारिता, अणुबुक्स, 2018, लखनऊ https://anubooks.com/uploads/session_pdf/166297055831.pdf

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.